॥ आयुश्य सूक्तम ॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उज्जहार प्राणैह शिरह कृत्तिवासाह पिनाकी ।
ईशानो देवह स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविशा घ्रुतेन ॥ १ ॥
विभ्राजमानह सरिरस्य मध्या-द्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात ।
स म्रुत्युपाशानपनुद्य घोरानिहायुशेणो घ्रुतमत्तु देवह ॥ २ ॥
ब्रह्मज्योतिर ब्रह्म पत्नीशु गर्भम यमादधात पुरुरूपम जयन्तम ।
सुवर्णरम्भग्रहम अर्कम अर्च्यम तमायुशे वर्धयामो घ्रुतेन
॥ ३ ॥
श्रियम लक्श्मीम औबलाम अम्बिकाम गाम शश्ठीम च
यामिन्द्रसेनेत्युदाहुहु ।
ताम विद्याम ब्रह्मयोनिग्म सरूपाम इह आयुशे तर्पयामो घेउतेन
॥ ४ ॥
दाक्शायण्यह सर्वयोन्यह स योन्यह सहस्रशो विश्वरूपा विरूपाह ।
ससूनवह सपतयह सयूथ्या आयुशेणो घ्रुतमिदम जुशन्ताम ॥ ५ ॥
दिव्या गणा बहुरूपाह पुराणा आयुश्छिदो नह प्रमथ्नन्तु वीरान ।
तेभ्यो जुहोमि बहुधा घ्रुतेन मा नह प्रजाग्म रीरिशो मोत वीरान
॥ ६ ॥
एकह पुरस्तात य इदम बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाह ।
यमप्येति भुवनग्म साम्पराये स नो हविर्घ्रुत मिहायुशेत्तु देवह
॥ ७ ॥
वसून रुद्रान आदित्यान मरुतो अथ साध्यान रुभून यक्शान

गन्धर्वाग्श्च
पित्रुग्श्च विश्वान ।
भृगून सर्पाग्श्चाम्गरिसो अथ सर्वान घ्रुतग्म हुत्वा स्वायुश्या
महयाम शश्वत ॥ ८ ॥
विश्णो त्वम नो अन्तमश्शर्मयच्छ सहन्त्य ।
प्रतेधारा मधुश्चुत उथ्सम दुह्रते अक्शितम ॥
ओम शान्तिह शान्तिह शान्तिहि ॥